

ॐ श्रीहरिः ।

\* लावनी \*

# ललनप्रमोहिनी

अर्थात् ललनसागर का बारहवां भाग ।

जिसको

फर्रुखाबाद निवासी ठुमरीबनायक पं० ललन-  
पिया ने भक्तमनोरञ्जनार्थ ललित व सरल  
भाषा के शब्दों में विरचित किया ।

प्रथमबार

लखनऊ

बाबू मनोहरलाल भार्गव बी. ए., सुपरिटेण्डेंट के प्रबन्ध से

मुंशी नवलकिशोर सी. आई. ई., के यन्त्रालय में छपा

सन् १९१४ ई०

हक तसनीफ महफूज है बहक नवलकिशोर प्रेस ।



श्रीगणेशाय नमः ॥

लावनी

ललनप्रमोहिनी ॥

दोहा ॥

गौरीपति सुत को सुमिरि, सदा शारदा माय ॥  
वरणों कृष्ण चरित्र को, भाषा सरल बनाय ॥ १ ॥

सोरठा ॥

एक रदन गुणवन्त, सब लायक सब सुख सदन ॥  
महिमा अमित अनन्त, आदि देव विद्या पती ॥ १ ॥  
वन्दों श्रीगणराज, मूषक वाहन गज वदन ॥  
करो कृपा महाराज, मोहिं आपनो जानि जन ॥ २ ॥  
सुमति ज्ञान की खानि, श्री शारद सुमिरत तुम्हें ॥  
देहु बुद्धि वरदान, कण्ठ ललन के वास कर ॥ ३ ॥

दोहा ॥

वन्दों यदुकुल मुकुट मणि, नन्दललन पद रेनु ॥  
प्रणवों पवनकुमार को, जिन्ह पद कामद धेनु ॥ १ ॥

सोरठा ॥

कीवर्तन फरुखाबाद, मित्रसेन कूँचा जहां ॥  
रहत सदा संवाद, नादवेद हरि चरित को ॥ १ ॥  
तहँ मूरति हनुमान, विदित देश देशान में ॥  
प्रमुदित तेजनिधान, अति सच्चा दरबार वर ॥ २ ॥



प्रति मङ्गल के वार, चढ़त भोग बागे विविध ॥  
 होत सुभग शृङ्गार, नाना नये नवीन नित ॥ ३ ॥  
 निज मन्दिर के तीर, गुणि जमात जगमगितहो ॥  
 नृत्य गान गम्भीर, वाद्य विशद हरियश कथा ॥ ४ ॥

### दोहा ॥

श्री गुरु नन्देमल चरण, साहित करें प्रणाम ॥  
 जिन करुणाकर ललन ते, लह्यो ललन पिय नाम ॥ १ ॥

अथ लावनी रत्न वशीकरण ॥ ( १ )

शशि ललाट शोभित अरुण अंगवाला है । गजवदन विना-  
 यक सिद्धि सदन आला है ॥ ( टोक ) हैं दयावन्त यक दन्त  
 चतुर्भुज धारी । मस्तक सिन्दुर सोहत विशाल छवि प्यारी ॥  
 शुकुटी बंकुट भौरों कि पांति बैठारी । लोचन दुख मोचन सुखद  
 सुवन त्रिपुरारी ॥ कानों कुंडल जगमगे चमकवाला है । गज-  
 वदन विनायक सिद्धि सदन आला है ॥ १ ॥ है एक हाथ में  
 मोदक थाल विराजत । दूजे कर पुस्तक वेद सहित की छाजत ॥  
 तृतिये कर पद्म चतुर्थ माल है राजत । जिनके ध्याये तत्काल  
 आपदा भाजत ॥ उर हार जड़ाऊ मुक्कन की माला है । गज-  
 वदन विनायक सिद्धि सदन आला है ॥ २ ॥ मूषक वाहन वर  
 आदि देव देवन में । सुरनर मुनि गावत प्रथम ध्यान वेदन में ॥  
 तुम सुख समूह की खान हौ सिद्धि करन में । देउ विद्या में मति-  
 हीन भक्ति भक्तन में ॥ तुम्हरे चरनन में आन शीश डाला है ।  
 गजवदन विनायक सिद्धि सदन आला है ॥ ३ ॥ तुम विद्या वा-  
 सिधि बुद्धि विधाता स्वामी । कर कृपा यही वर देउ मोहिं भरि



हामी ॥ हौ कृपासिन्धु सब लायक अन्तर्यामी । गौरी पति सुत  
गणपति गँभीर यश नामी ॥ तुमने दासन का काज नित स-  
म्हाला है । गजवदन विनायक सिद्धि सदन आला है ॥ ४ ॥  
मम नन्हेमल उस्ताद गवैया ज्ञानी । मिचू कूंचे हनुमान दरश  
सुखदानी ॥ ज्वालाप्रसाद सुत गणपति अस्तुति भानी । रागिनी  
ललन पिय कही मनोहर बानी ॥ जिसपर सहाय नित रहत  
नन्दलाला है । गजवदन विनायक सिद्धि सदन आला है ॥ ५ ॥  
-कही ललन लावनी जोड़े की रंगत मोहिनी ॥ ( २ )

। क्या मदन भरी भामिन भोली भोली है । गुल वदन सजे  
सीने पै चुस्त चोली है ॥ ( टेक ) है अलबेली अन्दाज वो माहे-  
तन की । दामिन से दूनी दमक भलक योवन की ॥ मिसले  
गुलाब नायाब आव गालन की । चितवन में जादू गजब नोक  
नैनन की ॥ अबरू कमान मुसक्यान मुरस घोली है । गुलवदन  
सजे सीने पै चुस्त चोली है ॥ १ ॥ खिलरही लबों मिससी क-  
माल है काली । दती बहार खुशनुमा पान की लाली ॥ लट  
नागिनसी हूबहू सुघर लटकाली । बलखाती रश्के कमर चाल  
मतवाली ॥ क्या गलेहार गौंहरी सो अनमोली है । गुलवदन  
सजे सीने पै चुस्त चोली है ॥ २ ॥ नरगिसी नैन की सैन ऐन  
प्यारी है । शिर सजे वसन्ती रंग रंगी सारी है ॥ इस कदर वदन  
पर नूर वजहदारी है । कुल आलम के मनबसी अदादारी है ॥  
नाजुकपन वदन कमाल मधुर बोली है । गुलवदन सजे सीने  
पै चुस्त चोली है ॥ ३ ॥ क्या गला सुराहीदार नारि मस्तानी ।  
सांचे का ढाला जिस्म नई नूरानी ॥ है हर नूर से परी परी पे-  
शानी । यह ललन पिया ने कहा छन्द लासानी ॥ नहिं जिसके



मिस्ल उसकी कोइ हमभोली है । गुलवदन सजे सीने पे चुस्त  
चोली है ॥ ४ ॥

लावनी रंगत रसीली ॥ ( ३ )

मृगनैनी कोमलवदन नारि प्यारी है । हँस हँस योबन दिख-  
लाती मतवारी है ॥ चितवन जादू है सितम नोक नैननकी ।  
अबरू कमान मुसक्यान मधुर कामनकी ॥ दामिन से दमक है  
अजब गजब गालनकी । मुख रचा पान खिलरही शान योबन  
की ॥ दै सैन नैन की कल करै नारी है । हँस हँस योबन दिख-  
लाती मतवारी है ॥ १ ॥ कानों में उसके करनफूल बाला है ।  
नौरतन हार गुलजार गले माला है ॥ साँचे का ढाला जिस्म  
नूर आला है । खिलरहा वदन योबन का उजियाला है ॥ शिरसजे  
सुघरसी पचरंगी सारी है । हँस हँस योबन दिखलाती मतवारी  
है ॥ २ ॥ मखमली शिकम क्या रश्क कमर कामन है । चेहरे  
पै नूर ज्यों माहताब रौशन है ॥ नस नस में रस छवि वदन में  
नाजुकपन है । योबन क्या गोया नौ बहारे गुलशन है ॥ क्या  
मस्त माधुरी चाल पै मन वारी है । हँस हँस योबन दिखलाती  
मतवारी है ॥ ३ ॥ क्या वदन मदन की फबन अजब गोरी है ।  
गुलवदन नारि सुकुमारि उम्र थोरी है ॥ नइ अदा नाज अन्दाज  
नवल भोरी है । पोरी पोरी छविदार रंग बोरी है ॥ कहि ललन  
पिया रागिनी कथन न्यारी है । हँस हँस योबन दिखलाती  
मतवारी है ॥ ४ ॥

भूला ॥

लावनी दूसरी ध्वनि रंगत रंगीली ॥ ( ४ )

राधावर नवलकिशोरी । दोउ भुलत हिंडोला गोरी ॥ ( टेक )



करि शृंगार ब्रजकी गुजरियां । वन चलीं मिसाले परियां ॥ पट  
 सारी साज चुनरियां । अरविन्द नैन सुकुमरियां ॥ शेर ॥ बेदी  
 बेना जड़ाऊ भूमडो भुमका बाली । नौ रतन चंपकली उर लबों  
 मिससी काली ॥ पहुंची कंकण कड़े पहिन चली योबन वाली ।  
 कर्धनी कटिसे कसी पांव में पाइल डाली ॥ टूट ॥ हिनादस्तों में  
 रची खुश रंग । मिसाले शफक से बेहतर रंग ॥ है बैस में थोरी  
 थोरी । दोउ भुलत हिंडोला गोरी ॥ १ ॥ गड़े उग्रखंभ कंचन के ।  
 हैं जड़े जाल हीरन के ॥ पड़े बेल ताज मुक्कन के । माणिक  
 मणि जटित रतन के ॥ शेर ॥ डांडी अनमोल पटा मलिया गिरि  
 के न्यारे । फुदमे रेशम के लगे लाल हरे कजरारे ॥ कारचोबी के  
 बिछे मख्मली बिस्तर सारे । रजे राधा छबीली संग पिया नन्द  
 दुलारे ॥ टूट ॥ नीप वृन्दन मंजुल छहियां । युगल मिल डारे गल-  
 बहियां ॥ छवि चन्दा निरखि लजोरी । दोउ भुलत हिंडोला  
 गोरी ॥ २ ॥ कुंजन में यमुना कूले । वन विटप सघन सब फूले ॥  
 बरसैं घन घुमँड सम्हूले । द्युति देखि मदन सुधि भूले ॥ शेर ॥ छटा  
 छाई है चहूँ ओर से कारी नई नई । पपिहाकी धुनि पिया की है  
 प्यारी नई नई ॥ कूकैं चकोर कोकिला न्यारी नई नई । सावन  
 की फस्ल खुशनुमा जारी नई नई ॥ टूट ॥ गरज घन शोर करै  
 भारी । चमक चपला की अधिक प्यारी ॥ यमुना जल पवन हि-  
 लोरी । दोउ भुलत हिंडोला गोरी ॥ ३ ॥ ललितादिक सखी भु-  
 लातीं । छवि निरखि निरखि सुख पातीं ॥ सखि सावन में मद-  
 मातीं । चितवन में चित्त चुरातीं ॥ शेर ॥ कानों कुंडल ललाट मोर  
 मुकुट मोहन के । लसे पटपीत कनक रंग नंद नंदन के ॥ मुर्ली  
 बजावैं श्याम मधुर मध्य वनितन के । गावैं मलार स्वर सुरीले



राग सावन के ॥ दूट ॥ मधुर मुसक्यान मनोहरता । हरत हिय  
 सखियन सुन्दरता ॥ रस छकित भामिनी भोरी । दोउ भुलत  
 हिंडोला गोरी ॥ ४ ॥ कोइ सखियां खड़ी भुलावें । कोइ पखियां  
 करन डुलावें ॥ कोइ अँखियां वाम लड़ावें । कोइ छतियां श्याम  
 लगावें ॥ शेर ॥ मुनी योगीश नारदादि शेष चतुरानन । देखि  
 छवि होवें मगन सुर समूह बरसें सुमन ॥ ज्वालाप्रसाद का सुत  
 नन्हे मल उस्ताद का जन । मांगे है भक्ति वर ललन प्रिया चर-  
 नन की शरन ॥ दूट ॥ धाम निज कूंचे मित्र सेन । विदित  
 हनुमान दरश सुख देन ॥ जुरे दरबार है मंगल कोरी । दोउ  
 भुलत हिंडोला गोरी ॥ ५ ॥

### वसन्त ॥

लावनी छोटी बहिर रंगत बेनजीर ॥ ( ५ )

॥ संग ब्रजबाला बाला ग्वाल । आज खेलत वसन्त नँदलाल ॥  
 यूथ जुर जुरकर ब्रजनारी । किये सोरह सिंगार भारी ॥ पहिर पट  
 सुन्दर शिर सारी । वदन द्युति छवि न्यारी न्यारी ॥ दोहरा ॥ मोर  
 मुकुट कंचन जटित, लहत श्याम के शीस । भाल खै कानन  
 में कुंडल, दें दामिनि द्युति मीस ॥ झुकुटि सम कमान नैन वि-  
 शाल । आज खेलत वसन्त नँदलाल ॥ १ ॥ सखी शिर सजे कु-  
 मड़ आला । कान कुमके बिजलीबाला ॥ नरगिसी दृग सुरमा  
 डाला । पड़ी उर हीरन की माला ॥ दोहरा ॥ नन्दगाँव मथुरा  
 बिरज, बरसाने की वाम । वदन मदन में मस्त मनोहर, सकल  
 परम अभिराम ॥ पान की लाली अधरन लाल । आज खेलत  
 वसन्त नँदलाल ॥ २ ॥ बाग वन उपवन भूमि मँझार । सुमन



फूले अनागिनित प्रकार ॥ जुही बेला गुलाब सुकुमार । चमेली  
 गेंदा रंगतदार ॥ दोहरा ॥ जहँ पंखी बोलैं सकल, मधुरे मधुरे  
 बैन । मैना मोर चकोर कोकिला, बक शुक अति सुखदैन ॥  
 हरेवा हरित आम की डाल । आज खेलत वसन्त नँदलाल ॥३॥  
 धुकट तक मधुर पखावज बाज । चंग मुह चंग सितार अवाज ॥  
 बज रहे भांति भांति के साज । गान कर रहे कृष्ण महाराज ॥ दो-  
 हरा ॥ निरत करहिं भामिनि सकल, छोम छनाना नादिर दिर-  
 नात । लचक लचक पग परन धरन शुभ, सुन्दर कोमलगात ॥  
 हँसत कोइ देत हस्त से ताल । आज खेलत वसन्त नँदलाल ॥४॥  
 फिकरहे विविध भांति के रंग । भरत पिचकारी मारत अंग ॥ कुम-  
 कुमा मारत कुचिन उत्तंग । मदन मोहन गोपिन के संग ॥ दोहरा ॥  
 उड़रहे लाल गुलाल बहु, पीरे श्वेत अबीर । भीगरहे सर्वोर रँ-  
 गन में, ब्रजवनितन के चीर ॥ मलें मोहन मुख रोली बाल ।  
 आज खेलत वसन्त नँदलाल ॥ ५ ॥ निरखि छवि ब्रह्मा विष्णु  
 महेश । मगन नारद शारद गन्धेश ॥ सहसमुख षट्मुख छकित  
 धनेश । सुमन की बरषा करत सुरेश ॥ दोहरा ॥ वतन फरुखाबाद  
 निज, मित्र कूंचा धाम । नन्हेमल उस्ताद के हैं, सागिरद जगत  
 सरनाम ॥ ललनपिय बंदिश छन्द रसाल । आज खेलत वसन्त  
 नँदलाल ॥ ६ ॥

होली ॥

लावनी छोटी बहिर रंगत बेनजीर ॥ ( ६ )  
 यूथ जुरि जमा हुई टोली । मची ब्रज कुंजन में होली ॥  
 ( टोक ) इधर सब समाज गोविन्दा । उधर ब्रज वनितन के



वृन्दा ॥ दिये मस्तक मारू बिन्दा । करें द्युति दामिनि शर-  
 मिन्दा ॥ दोहरा ॥ नैन ऐन सुखदैन चित, चैन दैन दृग सैन ।  
 चितवत चितन चुरावत चितवन, महा मनोहर बैन ॥ करें बतियां  
 भोली भोली । मची ब्रज कुंजन में होली ॥ १ ॥ सजे सोलह सिं-  
 गार सखियां । दिये कजर नजर अँखियां ॥ हिना से रचीं जँचीं  
 नखियां । लबों मिस्सी की बाढ़ रखियां ॥ दोहरा ॥ दँदां गौहर  
 सम सबी, रचे रँगीले पान । अजब गजब अन्दाज मनोहर, मन्द  
 मन्द मुसक्यान ॥ जरी कस कामसर्जी चोली । मची ब्रजकुंजन  
 में होली ॥ २ ॥ चुनरियां पचरँग परियासी । चमक योवन की  
 चपलासी ॥ मदन में भरीं खरीं खासी । परस्पर करें सकल हासी ॥  
 दोहरा ॥ वृन्दावन गोकुल बिरज, बरसाने की नारि । ग्वाल  
 बाल नँदलाल साँवरो, खेलत फाग बिहारि ॥ फिकें कुमकुमा  
 जमा रोली । मची ब्रज कुंजन में होली ॥ ३ ॥ बने बहु रंग अ-  
 नेक प्रकार । सहाबी सब्जाबी तैयार ॥ सुख सन्दली चटक गुल-  
 नार । अबीरी गम्भीरी रँगदार ॥ दोहरा ॥ रतन जटित कंचन  
 कलश, भरे रङ्ग रङ्गीन । चहुँ दिशि मारामार सकल मिलि,  
 फेंकें रंग नवीन ॥ लिये कर पिचकारी पोली । मची ब्रज कुंजन  
 में होली ॥ ४ ॥ इतर चोया चन्दन आली । मलत यक यक के  
 ब्रजवाली ॥ हँसैं दै दै दस्तन ताली । फाग की गावें मिलि गाली ॥  
 दोहरा ॥ सब्ज बैजनी पीतरँग, लाल गुलाल गँभीर । चाव भरी  
 चटपटी छबीली, फेंकें मुठिन अबीर ॥ करें आपस में ठाठोली ।  
 मची ब्रज कुंजन में होली ॥ ५ ॥ फरश बिछरहे फलालैनी ।  
 फाग खेलैं सखि चित चैनी ॥ कोई श्यामली गौरपैनी । अधिक  
 मृदुबैनी मृगनैनी ॥ दोहरा ॥ बाजत बीन विशालवर, बरनै बरन



प्रसंग । मुर सिंगार मुरचंग मँजीरा, डफ सितार स्वर संग ॥ सही स्वर सिंगार अनमोली । मची ब्रजकुंजन में होली ॥ ६ ॥ मृदुल मंजुल खाव तबला । बजातीं गातीं गति अबला ॥ भांभ भन्-कारदार ढफला । बजैँ ढोलक निरतैँ नवला ॥ दोहरा ॥ विविध भांति बाजन बजैँ, साज समाज समेत । ताल नाल करताल भालवर, सारंगी छवि देत ॥ चङ्ग तम्बूरा घंटोली । मची ब्रज कुंजन में होली ॥ ७ ॥ स्वरीले सही रागिनी राग । सकल गातीं फागुन में फाग ॥ मगन मनभरीं प्रेम अनुराग । सरहतीं अपने अपने भाग ॥ दोहरा ॥ जै जै वृन्दावन सुभग, जै शुभ गोकुल गाँव ॥ जै जै ब्रज कमनीय अधिक वर, बरसाने की ठाँव ॥ जहाँ हरि हरि की हमझोली । मची ब्रजकुंजन में होली ॥ ८ ॥ फर्रुखाबाद शहर दरम्यान । खास मिचू कूंचे मकान ॥ दरश जहँ नामी श्रीहनुमान । चतुर शुभ राजत देवस्थान ॥ दोहरा ॥ हर हफ्ते हर मास के, मंगलवार सुखार । चढ़ै बहुत परसाद जमा हो, वे भारी दरबार ॥ गावना हो रस रंगोली । मची ब्रज कुंजन में होली ॥ ९ ॥ गवैया नन्हेमल उस्ताद । भ्रात जिनके ज्वाला-प्रसाद ॥ विप्र सारस्वत ज्ञाता नाद । जहाँ मैं जाहिर यश मर्याद ॥ दोहरा ॥ सम्मुख कोठा पारचा, मिशन मँदरसा पास । कटरा अहिमदगंज ललनपिय, कीये बन्दिश खास ॥ ललित जिनकी विशाल बोली । मची ब्रज कुंजन में होली ॥ १० ॥

कृष्ण उलहना ॥

लावनी छोटी बहिर रंगत रसीली ॥ ( ७ )

यशोदा सुन सुतको संवाद । श्याम ढँग किये नये ईजाद ॥ ( ठेक ) आज मैं गई करन अस्नान । सोई निरदई मिलो मुहिं



सुनो माई । श्याम दधि लूट २ खाई ॥ ४ ॥ श्याम की यशुदा  
 सों फरियाद । करें सखि ज्यों ज्यों किया फिसाद ॥ इधर हरि ग्वाल  
 गहे उन्माद । गये भामिनि घर उसके बाद ॥ दोहरा ॥ दही  
 दहेड़ी महीपर, दूध दुधेड़ी डाल । लियो सकल मिलि खाय कछुक  
 ढरकाय दियो नंदलाल ॥ वेगि भगि आये यदुराई । श्याम दधि  
 लूट २ खाई ॥ ५ ॥ भवन में आये जब गोपाल । संग में लिये  
 सकल गण ग्वाल ॥ निरखि यशुदा हुइ खफा कमाल । बुलायो  
 सबको अपने नाल ॥ दोहरा ॥ झुकुटी तान कमान सी, भिड़क  
 यशोमति मात । पूछत हरि से हाल हाल, बतलाओ क्या यह बात ॥  
 सीख यह किसने सिखलाई । श्याम दधि लूट २ खाई ॥ ६ ॥  
 चितै यदुपति यशुदा की ओर । मोहिनी धरे दृगन की कोर ॥  
 वचन बोले कोमल चित चोर । कहा पूछत लखि मोरी खोर ॥  
 दोहरा ॥ मैं जानत लाई सखी, कुछ मेरी फरियाद । यासों तुम  
 होरहीं खफाहो, सुन भूठो संवाद ॥ दे मैया मुहिंका बतलाई ।  
 श्याम दधि लूट २ खाई ॥ ७ ॥ कहा यह कहती मेरी बात । खड़ी  
 योवन मद में अठिलात ॥ निलज ऐसी ग्वालिन की जात ।  
 भूठ अति कहत न नेक लजात ॥ दोहरा ॥ यह ग्वारी भारी च-  
 पल, चित चलांक गम्भीर । बृथा नाम बदनाम मेरा जग, किया  
 विना तकसीर ॥ बड़ी आफत मोरी आई । श्याम दधि लूट २  
 खाई ॥ ८ ॥ न मैं जानत हूं इसका नाम । कौन यह बसत  
 कौन के ग्राम ॥ गया मैं वन ब्रज कुंज तमाम । न देखी कभी ये  
 चतुरावाम ॥ दोहरा ॥ निबल जान निपटहि मुझे, निरखि निपट  
 नादान । आई मेरे भवन भामिनी, भूठो भगरो ठान ॥ परखि  
 लइ इसकी कुटिलाई । श्याम दधि लूट २ खाई ॥ ९ ॥ बुरी यह



बात मात मसलन । न मैं लूटा इसका माखन ॥ न कोई तोड़ा दधि  
 बरतन । धरत मम भूठ नाम जबरन ॥ दोहरा ॥ मैं मोरे हम-  
 भोलिया, सगरे सखा समाज । वंशीवट को गये प्रात सों, धेनु  
 चरावन काज ॥ अभी आवत वन से धाई । श्याम दधि लूट २  
 खाई ॥ १० ॥ सुना बतियां भोरी भोरी । लियो भस्माय माय  
 कोरी ॥ श्यामतन तीव्रतेज सोंरी । अमीले दृग करि चित चोरी ॥  
 दोहरा ॥ हाथ लकुट मुरली अधर, छवि फव छजत अनन्त ।  
 लखि यशुमति मोहन की माया, मोहित भई अत्यन्त ॥ मगन  
 मन हिय हुलासताई । श्याम दधि लूट २ खाई ॥ ११ ॥ बहुरि  
 बोली यशुमति रानी । अरी ग्वाली अब मैं जानी ॥ कुटिल तुहि  
 किया श्याम दानी । अपन बनती सांची स्यानी ॥ दोहरा ॥ सुनि  
 यशुदा के वचन सखि, बोली इमि इतरात । तुम सांची तुम्हरे  
 सुत सांचे, मोरि भूठ सब बात ॥ कहो तुम सही सो अधिकाई ।  
 श्याम दधि लूट २ खाई ॥ १२ ॥ भवन भामिनि पहुँची जोई ।  
 दूध दधि देखो ढरकोई ॥ जान औगुन मोहन कोई । दुखित है  
 सब मति गति खोई ॥ दोहरा ॥ युवती जोरि बुलाय पुनि, हरि  
 के चरित दिखाय । आई सखिलै फेर उलहना, देन भवन नँद-  
 राय ॥ वेगि यशुदा को गोहराई । श्याम दधि लूट २ खाई ॥ १३ ॥  
 तोर सुत नोखो मरदाना । लाड़िलो भयो जगत् जाना ॥ बिसर  
 जाय ऐसा अठिलाना । मेश कर दीन्हा नुकसाना ॥ दोहरा ॥  
 घर मेरे चल देखिये, अपने सुत के ढंग । दूध दही नवनीत मठा  
 दियो, फेक भयो मत भंग ॥ धरनिधर मटुकी पटकाई । श्याम  
 दधि लूट २ खाई ॥ १४ ॥ गवह सब हैं ग्वालिन मेरी । पूँछ तुम  
 देखो इन सेरी ॥ कहूं क्या क्या ढंग हरि केरी । दुखित मैं भई



अति सौं तेरी ॥ दोहरा ॥ जब २ मैं करियाद को, लाई तुम्हरे  
 पास । भूँठ जानि नित कह्यो मोर कब, हूँ न कियो विश्वास ॥  
 आज अब लीजे अजमाई । श्याम दधि लूट २ खाई ॥ १५ ॥  
 भये ब्रज में अनेक राजा । एक से एकहि शिरताजा ॥ सतायो  
 कोइ न बिनकाजा । नये नोखे यह महाराजा ॥ दोहरा ॥ हम  
 दासी वैसेहि सकल, हरि हमरे प्रियदेव । वृथा करत नुकसान  
 हमारो, यह नहिं उनको जेव ॥ कहा प्रभु के मन में भाई । श्याम  
 दधि लूट २ खाई ॥ १६ ॥ हटकि हारी हजार बारी । न मानत  
 हटको बनवारी ॥ बानि यह बुरी कान्ह डारी । सदा छेंड़त ब्रज  
 की नारी ॥ दोहरा ॥ जासों आय सुनाय कै, दियो तुम्हें जत-  
 राय । फिर मत लीजो ओर कृष्ण की, कबहुं यशुमति माय ॥ आज  
 करवादी सच्चाई । श्याम दधि लूट २ खाई ॥ १७ ॥ बैन गोपिनके  
 सुनि मैया । सांच जिय जानी अधिकैया ॥ सकुच पुनि बोली  
 अरदैया । भयो सुत ऐसो कान्हैया ॥ दोहरा ॥ यह बातें सब सुन  
 लई, अब हमरी चित देउ । कियो जो कुछ नुकसान तुम्हारो,  
 तासु दुगुण तुम लेउ ॥ बहुरि मत करियो लँगराई । श्याम दधि  
 लूट २ खाई ॥ १८ ॥ उलहना दै दै सखि हरिको । चलीं अपने  
 अपने घरको ॥ इधर यशुमति श्रीगिरिधरको । अधिक समझायो  
 नटवरको ॥ दोहरा ॥ बारबार सिखयो तुम्हें, मानत ना नादान ।  
 मजा कौन दधि लूट खान में, कहा तिहारी बान ॥ न तुम काहू  
 को शरमाई । श्याम दधि लूट २ खाई ॥ १९ ॥ न जानत है  
 अबहीं प्यारे । कठिन है ह्यां को राजारे ॥ अमलदारी जिसकी  
 सोरे । डरत हम उसके डरमारे ॥ दोहरा ॥ सुर नर मुनि भय खात  
 सब, महाबली नृप कंस । सुनि पावै यह बात पकड़ बुलबावै



बज यदुषंश ॥ तजै नहिं विन वध करवाई । श्याम दधि लूट २  
 खाई ॥ २० ॥ नहीं क्या तुम्हरे घर माखन । जो अबलन घर  
 जाओ चाखन ॥ यहां ही ग्वाल बाल लाखन । मांगने आवत  
 लखि आंखन ॥ दोहरा ॥ अपने घर को छांडिकै, जात पराये  
 धाम । नाहक को पितु मात सबन को, करत नाम बदनाम ॥  
 प्रतिष्ठा इन बातन जाई । श्याम दधि लूट २ खाई ॥ २१ ॥ श्र-  
 वण मुनि वचन मात के सांच । दुखित अति मन मलीनता  
 जांच ॥ मृदुल प्रभु बोले बतियां पांच । सांच में नेक न आवत  
 आंच ॥ दोहरा ॥ मायाकर मायाधनी, मनमोहन गोपाल । मोहि  
 लियो मन वेगि मात को, दर्शा रूप रसाल ॥ लाल फैला दी  
 चतुराई । श्याम दधि लूट २ खाई ॥ २२ ॥ अलख अनुरूप देव  
 स्वामी । सकल घट २ अन्तरयामी ॥ अपार माया गुणनिधि  
 नामी । राधिका रमण ब्रह्मधामी ॥ दोहरा ॥ जाको शिव सुरपति  
 धरत, ध्यान वेद मुनि वृन्द । सो सुत है अवतरे नन्दगृह, स-  
 कल सच्चिदानन्द ॥ अगम जिनकी लीला छाई । श्याम दधि  
 लूट २ खाई ॥ २३ ॥ सकल जग के करता धरता । विघन घन  
 विपदा के हरता ॥ दनुज दल काल जिन्हें डरता । सन्त सेवक  
 के सुख करता ॥ दोहरा ॥ हरण सकल भव भार को, प्रकटे  
 दीनानाथ । भक्तन हित दानवदल सारे, मारे अपने हाथ ॥  
 जगत यश जाहिर सुखदाई । श्याम दधि लूट २ खाई ॥ २४ ॥  
 शरण उन चरणन की लीजै । सफल आपनो जन्म कीजै ॥  
 वृथा जनि बयस खोय दीजै । सदा हरि नाम अमृत पीजै ॥  
 दोहरा ॥ जाके भजन प्रभावते, हों अनन्द दुख दूर । अष्ट-  
 सिद्धि नवनिधि सम्पदा, हाजिर हों भरपूर ॥ पूर्ण पदवी प्रद



यदुराई । श्याम दधि लूट २ खाई ॥ २५ ॥ दीनजन जानि  
 मोहिं अत्यन्त । करो अब कृपा वेगि भगवन्त ॥ अधिक  
 आस्त हो स्वारथवन्त । पुकारूं तोर द्वार श्रीकन्त ॥ दोहरा ॥ हे  
 करुणानिधि शीलनिधि, नेह धनी भगवान । भक्ती चरण सरोज  
 पावनी, देहु मोहिं वरदान ॥ चहत जन तुमपद सेवकाई । श्याम  
 दधि लूट २ खाई ॥ २६ ॥ फर्रुखाबाद शहर अशराफ़ । सकल  
 शहरों से चलन है साफ़ ॥ विदित नामी मण्डी सराफ़ । जहां के  
 नर आकिल हरीफ़ ॥ दोहरा ॥ काशी सम पावन नगर, रहत  
 सदा आबाद । परम पुनीत नीति अति सुन्दर, प्रचलित शुभ  
 संवाद ॥ हाट मनभावन शुभकाई । श्याम दधि लूट २ खाई ॥ २७ ॥  
 धरम जहँ होत धुन्धुकारी । ज्ञान मत जप तप संचारी ॥ प्रेम युत  
 शीलवन्त भारी । दयालू जहँ के नर नारी ॥ दोहरा ॥ पावन प-  
 रम सुहावनी, गति मति देनि अपार । बहत निकट सुरसरि की  
 धारा, तारण अघ भवभार ॥ महा सुखदाई जगमाई । श्याम  
 दधि लूट २ खाई ॥ २८ ॥ किये ज्यहि दर्श होत दुख दूर । करे  
 स्नान देत सुख पूर ॥ प्रतापिनि अमित तेज भरपूर । वेद श्रुति  
 पुराण में मशहूर ॥ दोहरा ॥ कलिमल अघ जग कुमति अति,  
 हरणि पीर गम्भीर । पतित अपावन पावन करणी, अखिल रोग  
 रिपु नीर ॥ विदित तिहुँ लोकन प्रभुताई । श्याम दधि लूट २  
 खाई ॥ २९ ॥ चौक कुतवाली के दरम्यान । मदरसा मिशन सु-  
 घर स्थान ॥ है कटरा अहमदगंज बखान । जहाँ जुम्मा मस्जि-  
 दिक मकान ॥ दोहरा ॥ सम्मुख कोठा पारचा, द्वितीय मुहल्ला  
 नाम । जहँ हरि शिव मन्दिर सुन्दर छवि, राजत अति अभिराम ॥  
 हो हरि जन्मोत्सव शुभदाई । श्याम दधि लूट २ खाई ॥ ३० ॥



वतन मित्र कूंचे में आम । राम लीला जहँ बनत ललाम ॥  
 होयँ जारी नवीन नित काम । चहुँ दिशि देश २ सरनाम ॥  
 दोहरा ॥ निशि वासर चरचा रहत, नाद वेद गुण गान । चारि  
 देव मन्दिर जहँ राजत, विदित मूर्ति हनुमान ॥ महातेजस्वी  
 वरदाई । श्याम दधि लूट २ खाई ॥ ३१ ॥ जुरत जन मंगल को  
 समुदाय । चढ़ावत ध्वजा पताका लाय ॥ कोई पटुका पोशाक  
 सजाय । करत अर्पण प्रसाद बनवाय ॥ दोहरा ॥ प्रतिदिन पवन-  
 कुमार हित, चढ़त विविध विधि भोग । पुआ पगे मिष्टान्न बताशा,  
 जो जैसा जिस योग ॥ चढ़ावत घृत सिंदुर लाई । श्याम दधि  
 लूट २ खाई ॥ ३२ ॥ चँवर चांगल से चटकीले । चढ़ें सुन्दर स-  
 फेद पीले ॥ छत्र सौवर्णिक रजतीले । समर्पण होयँ नग जड़ीले ॥  
 दोहरा ॥ घंटा लघुदीर्घ घने, चढ़त बली के द्वार । दूर दूर नामी  
 प्रताप यश, अति साँचा दरबार ॥ मनोकामना सुफलताई । श्याम  
 दधि लूट २ खाई ॥ ३३ ॥ निकट हरि मन्दिर मन्दिर तीर । होत  
 गाना गुणि जन की भीर ॥ जमा गन्धर्व चर्व तदबीर । बजैं बहु  
 साज बाज गंभीर ॥ दोहरा ॥ देश देश के चतुर जन, करत अ-  
 खाड़ा आन । गाय बजाय पाय परमानंद, पावत अति सन्मान ॥  
 करत रसपान प्रमुदताई । श्याम दधि लूट २ खाई ॥ ३४ ॥ नन्हें  
 उस्ताद मुजन सुखरास । गवैया नामी नाम प्रकास ॥ भ्रात  
 ज्वालाप्रसाद के खास । सांगीताधिप करन हुलास ॥ दोहरा ॥  
 नव दुर्गा तिथि पंचमी, मंगल चैत्र सरीस । ब्रज विलास हरि  
 यशपैंतीसी, केरि चौक पैंतीस ॥ ललन पिय की शुभ कविताई ॥  
 श्याम दधि लूट २ खाई ॥ ३५ ॥ इति श्रीद्विजवर्यपरिडतललन  
 पियशर्मविरचिता हरिचरित्रपंचत्रिंशत्पादिका समाप्ता ॥



## बरजोरी लीला ॥

लावनी रंगत रसीली ॥ ( ६ )

नहिं छांडत हरि नादानी । बरजो यशुदा महरानी ॥ ( टेक )  
 मैं नीर तीर यमुना के । नहिं समीप पनघटवा के ॥ डर डरी नन्द  
 ब्रैला के । गइ औघट घाट बनाके ॥ छन्द ॥ कर सोलह शृङ्गार  
 साज सुन्दरसी शिर सारी । भाल बेंदुली शीस ईडुली पर गागर  
 धारी ॥ हेरत इत उत चलत डगर में साथ होशियारी । मिल  
 जायेना कहीं सांवरो तुम्हरो बनधारी ॥ टूट ॥ यही मैं करती रही  
 विचार । सोई आनंद को मिलो कुमार ॥ ज्यहि संग सखा बल-  
 वानी । बरजो यशुदा महरानी ॥ १ ॥ मुहिं देखि कछुक मुस-  
 क्यायो । पुनि लपक भफक तट आयो ॥ गागर पर हाथ चलायो ।  
 पटपीत पकरि भटकायो ॥ छन्द ॥ परी परीसी खरी मून्हरी करीथी  
 रंगोली । बलबीरा बेपीरा फारी चूनर अनमोली ॥ भरी अङ्क औ-  
 चक निशङ्क ने कर कर ठाठोली । फरिया बूटेदार फाट गइ भं-  
 भट में चोली ॥ टूट ॥ गिरो हरवागरवा कोरी । माल मुतिया  
 द्युतिया तोरी ॥ कुच मसकत अधिक पिरानी । बरजो यशुदा  
 महरानी ॥ २ ॥ मुहिं लखि अकेलि नादाना । मग में मोहन  
 अठिलाना ॥ हरगिज हटका नहिंमाना । मुहिं कियो अधिक है-  
 राना ॥ छन्द ॥ करीरारि मारग में मोहन मटकी पटकाई । कियो  
 बहुत नुकसान तुम्हारे कान्ह सुनो माई ॥ हटकि हड़ी हट नैक  
 न छांडी चंचल कान्हाई । पकड़ हाथ सों हाथ दियो कर कंकण  
 करकाई ॥ टूट ॥ मुनासिब है तुमको यह बात । मनाकर देना हरि  
 को मात ॥ हरि भयो महाअभिमानि । बरजो यशुदा महरानी ॥ ३ ॥



लइ लाज आज मम माई । कर दर्इ कुगति यदुराई ॥ नहिं छिपै  
ये बात छिपाई । हँसिहैं मुहिं लोग लुगाई ॥ छन्द ॥ करुं बहाना  
कौन भवन को किस विधि में जाऊं । सास ननँदि हो खफा उसे  
में क्योंकर समझाऊं ॥ खोंटा है खाविन्द मेरा मैं उसका भय  
खाऊं । करै खराबी खूब हाल फिर क्या मैं बतलाऊं ॥ टूट ॥ यही  
है सोच मुझे भारी । चलै नहिं कोइ हिकमत म्हारी ॥ मति माय  
मोर बौरानी । बरजो यशुदा महरानी ॥ ४ ॥ इतने में नँद के  
लाला । आये घर में गोपाला ॥ सँग सकल चतुर गण ग्वाला ।  
यक यक सों रूप विशाला ॥ छन्द ॥ देखि मात रिस खात बात  
पूछत कान्हाई से । हाल बताओ हाल लाल मुझको सचाई से ॥  
भये निपट बेलाज बाज नहिं रहो ठिठाई से । नफा हर दफा क्या  
हासिल ऐसी लँगराई से ॥ टूट ॥ जो छेंड़ो तुम मुदाम ब्रजवाम ।  
न मानत बरजे से घनश्याम ॥ क्या है तुम्हरे मन मानी । बरजो  
यशुदा महरानी ॥ ५ ॥ है कठिन राज राजाको । नहिं जानत  
हौ तुम ताको ॥ गम्भीर अदल है जाको । शिरताज सकल मथुरा  
को ॥ छन्द ॥ जाके भय भयखात जगत के सब नर औ नारी ।  
द्विजदानव देवता करैं न्यारी ताबेदारी ॥ तुमहो सुत नादान न  
जानों कान्ह बात भारी । परै उसे मालूम बुलाये बँधवा ब्रजसारी ॥  
टूट ॥ इसीसे सीख मान येती । चलो शिर नवा सबन सेती ॥ या  
में यश जग दरम्यानी ॥ बरजो यशुदा महरानी ॥ ६ ॥ जब  
यशुदाने हरकोरी । यूँ कहि कर समझायोरी ॥ तब हँसिकर  
श्याम कह्योरी । क्यों डरो कंस खलसोरी ॥ छन्द ॥ ऐसे खल  
दल अनेक माई में छिन में मारे । जितने वैरी हैं अनगैरी दलन  
करुं सारे ॥ कंस वंश को जरा न राखूँ ये दुश्मन म्हारे । इन्हें



मार भव भार उतारुं अति अधर्म धारे ॥ दूट ॥ दुखी जिन से दु-  
 नियां द्विजदेव । अजापी पापी कंस अतेव ॥ मौत आ उसकी  
 नधिचानी । बरजो यशुदा महरानी ॥ ७ ॥ यह ग्वालिन है मद-  
 माती । नित भूठ उलहना लाती ॥ ज्वानी का जोर दिखाती ।  
 नहिं नैनन नेक लजाती ॥ छन्द ॥ बार बार यह नारि द्वार आवे  
 मोरे मैया । करै भूठ फरियाद हमेशा भूठी अधिकैया ॥ है शरीर  
 गम्भीर गँवारी भारी वनितैया । नित फिसाद यक भवन लियावै  
 चंचल चपलैया ॥ दूट ॥ मजा इससें इसको क्या होय । पि-  
 छाड़ी पड़ी मेरे कर धोय ॥ है दीठ कुटिल छुट स्यानी । बरजो  
 यशुदा महरानी ॥ ८ ॥ मैंने क्या इसका लीया । बदनाम जगत  
 मुहिं कीया ॥ है कुचाल खोटी तीया । नहिं डरै निलाजिनि हीया ॥  
 छन्द ॥ लोक लाज कुलकानि बिसारे अकिल से अति खाली ।  
 आप करै औ ढंग लगावे औरों को आली ॥ चेहरे से साबूत शरा-  
 रत है त्रियछुट चाली । करती जबरन बात हुस्नके मद में मत-  
 वाली ॥ दूट ॥ चतुर चितहै चांगल चटपटी । ये खोटी से खोटी है  
 छटी ॥ या में औगुन की खानी ॥ बरजो यशुदा महरानी ॥ ९ ॥  
 मुन बैना मात कुमर के । सखिओर लखी रिस करिके ॥ मन मान  
 हार उरडरके । रम चली भवन दृगभरके ॥ छन्द ॥ जब जानी हरि  
 दुखी सुखी तब करिकै चतुराई । वेगि आय निज द्वार मनोहर माया  
 दरशाई ॥ देखि मोहिनी मुरति मुरत भामिनि की बिसराई । उपजा  
 हिय अनुराग भाग धनि कहकर मुसक्याई ॥ दूट ॥ भले तुम हो  
 मोहन लाला । करो जस चाहें तस ख्याला ॥ मुहिं कियो निपट  
 खिसियानी । बरजो यशुदा महरानी ॥ १० ॥ चतुरन के चतुर  
 कहावो । रंग ढंग नवनित उपजावो ॥ छलबल नित नवल



देखावो । रस वश कर सखि भरमावो ॥ छन्द ॥ हौ ऐसे मिस करन  
हरन गति मति ब्रज बाला के । भूँठि मोहिं करदिया सांवरे सम्मुख  
यशुदा के ॥ तुम माया के जाल मनोहर सागर शोभा के । जग  
जाहिर चालिया सम्हारे बांके विधिना के ॥ टूट ॥ आज जाना  
तुमको मैंने । बाद में पड़ो प्रबल पैने ॥ पग परसि सखी हुल-  
सानी । बरजो यशुदा महरानी ॥ ११ ॥ धनि धनि यह मोहिनि  
मूरत । धनि धनि छवि श्यामलि सूरत ॥ धनि धनि चितवन ज्यहि  
घूरत । मन सकल मनोरथ पूरत ॥ छन्द ॥ धनि मोहन तुम्हरी  
गति मति को पार नहीं पायो । नन्हेमल उस्ताद श्याम चरणन  
में चितलायो ॥ शहर फर्रुखाबाद मुहल्ला मित्रसेन गायो । जहँ  
नामी हनुमान मूरती दरशन मन भायो ॥ टूट ॥ ललित पद  
बन्दिश ललन पिया । देव वर भक्ती सांवलिया ॥ जन जानि बरहु  
बुधि बानी । बरजो यशुदा महरानी ॥ १२ ॥

### चोरीलीला ॥

लावनी ध्वनि जोड़े की रंगत मनभावनी ॥ ( १० )

लखि खाली भवन न गोरी । जा कान्ह करी दधि चोरी ॥ (टेक)  
सज २ सिंगार ब्रजनारीं । पट पहिर कुसुम्भी सारीं ॥ छवि अंग २  
उजियारीं । परछन अम्बिका सिधारीं ॥ दोहरा ॥ बेंदी बेना सुभग  
अति, हार हिये छविदेत । भुमका भूमड़दार बालियां, बालापात  
समेत ॥ टूट ॥ बदनमें सब गहना आला । सरया सांचे का ढाला ॥  
गई सखियां हुइ इकठोरी । जा कान्ह करी दधि चोरी ॥ १ ॥ सखि  
देवी पूजि मनाई । पूजा वर भेट चढ़ाई ॥ डफ ढोलक भांभ ब-  
जाई । हँसि हँसि अम्बागुण गाई ॥ दोहरा ॥ हा हा कर कर



जोरि कर, मांग्यो सब वरदान । हे माता मोहिं पुत्र देहु तुम,  
सुनो टेर दै कान ॥ टूट ॥ कदम की छैयां सुख लीन्हे । सुघर षटरस  
भोजन कीन्हे ॥ पड़ैं बूंदैं घन चहुँ श्री । जा कान्ह करी दधि  
चोरी ॥ २ ॥ इत कान्हा गोरस खावें । घर अँगना दधि ढरकावें ॥  
बँशिया को फूंक बजावें । ध्वनि मधुरी तानें गावें ॥ दोहरा ॥ पात  
पात घर देखिकर, दई दहेंड़ी फोड़ । पटक पटक दूधाड़ीं हाड़ीं,  
दीन्हीं कान्हा तोड़ ॥ टूट ॥ किया नुकसान अधिक आली । आई  
इतने में ब्रजबाली ॥ गोपिन लखि श्याम लुकोरी । जा कान्ह करी  
दधि चोरी ॥ ३ ॥ गई घर अन्दर ब्रजबाला । लियो पकड़ नन्दको  
लाला ॥ दियो फेंक दही खा डाला । कहँ भगादिये तुम ग्वाला ॥  
दोहरा ॥ सब सखियां कीन्हो मता, चलो यशोदा पास । पकड़  
श्याम लै चलि यशुदा ढिग, तबहिं करै विश्वास ॥ टूट ॥ हमेशा  
कहे है भूँठी माय । करावें आज सांच समुझाय ॥ लै चलीं गांस  
गण गोरी । जा कान्ह करी दधि चोरी ॥ ४ ॥ जुर जुर समाज  
मदमातीं । हरि यशुदा तट भईं लातीं ॥ आपसमें हँसि बतलातीं ।  
चलो माय आज शरमातीं ॥ दोहरा ॥ जबहीं भवनै द्वारपर, पहुँचीं  
सखियां धाय । रूप कृष्ण धारण कर लीन्हो, उनके पतिको  
आय ॥ टूट ॥ दिया हरि पतिका कर पकड़ाय । आप घर बैठे  
अपने जाय ॥ कहैं मैं मैया भूँखोरी । जा कान्ह करी दधि चोरी ॥ ५ ॥  
गई सखियां नँद के भवना । यशुदै टेरेँ खड़ि अँगना ॥ लियो  
पकड़ आज हम मुहना । लाई तुम ढिग यहि ठगना ॥ दोहरा ॥  
दूध दही फेंक्यो सबी, कियो बहुत नुकसान । हम ब्रजबाला दु-  
खित बहुत यह, कौन कान्ह की बान ॥ टूट ॥ कहैं क्या हम तुम  
से मैया । हटक नहिं मानै कान्हैया ॥ तुमरो सुत ढीठ भयोरी ।



जाकान्ह करी दधि चोरी ॥ ६ ॥ लखि पति उनको नँदरानी ।  
 रिस खाय कही बौरानी ॥ तुम्हें सूझत नाहिं दिवानी । निरखो  
 यह कौन सयानी ॥ दोहरा ॥ जबहीं पतिको मुख लख्यो, खिसि-  
 यानी भई वाम । उलटे पांव न लौट चलीं सब, अपने अपने धाम ॥  
 टूट ॥ बात कछु नाहीं बनि आई । भूल सब गई वो चतुराई ॥  
 नहिं हरि चरित्र परखोरी । जा कान्ह करी दधि चोरी ॥ ७ ॥  
 गिरिधर की अपार माया । गोपिन गुन नहीं लखाया ॥ है नंद-  
 नंदन की दाया । कथि छन्द ललनपिय गाया ॥ दोहरा ॥ शहर  
 फर्रुखाबाद में, नन्हेमल उस्ताद । दूर दूर सरनाम भ्रात जिन, के  
 उवालापरसाद ॥ टूट ॥ मुहल्ला मित्र कूंचा धाम । मूर्ती महावीर  
 सरनाम ॥ जिन्ह तेज प्रताप घनोरी । जा कान्ह करी दधिचोरी ॥ ८ ॥

## दानलीला ॥

लावनी रंगत वशीकरण ॥ ( ११ )

मात मुनु हरिका अठिलाना । मांगते यौवन का दाना ॥ टेक ॥  
 चली मैं जल भरने जाती । भपटि भट मसकि दई छाती ॥ मुझे  
 यह बात नहीं भाती । कहत मैं तुम से शरमाती ॥ दोहरा ॥ राज  
 कंस महाराज को, करत कृष्ण असधांध । सुन पावै जो खबर  
 पकरि, बुलवावे सब ब्रज बांध ॥ जिसके डर डरै रावराणा । मां-  
 गते यौवन का दाना ॥ १ ॥ न जानत मुहिका बनवारी । हूं  
 मथुरा की बसने हारी ॥ कंस की मैं चेरी ग्वारी । अदल जिनका  
 हैगा भारी ॥ दोहरा ॥ यासे मैं आई कहन, दियो तुम्हें जतलाय ।  
 नंदके छैला ठीठ अनोखे, को दीज्यो समुझाय ॥ पड़ैगा मालुम  
 इतराना । मांगते यौवन का दाना ॥ २ ॥ नफ़ा इन बातन में



नाहीं । जो मुहिका छेड़त मगमाहीं ॥ पकड़ कर झपट झटक  
 बाहीं । करै अनुचित ढंग हर ठाहीं ॥ दोहरा ॥ भयो अनोखो ला-  
 डलो, ये तुम्हरो फरजन्द । बार २ धूँघट पट टारै, करै शरि छल  
 छन्द ॥ न बरजो मानत नादाना । मांगते यौवन का दाना ॥ ३ ॥  
 बाट यह है बरसाने की । मेरे नित आने जाने की ॥ बानि  
 हरिकी अठिलाने की । बात ये नहीं निभाने की ॥ दोहरा ॥ कई  
 बार गम खाचुकी, तुम्हरी ओर निहार । अब नहिं जाती सही  
 शरारत, बे मुमकिन हर बार ॥ भले को नहीं बैरठाना । मांगते  
 यौवन का दाना ॥ ४ ॥ आज बिन काज लाज लेली । चुनरिया  
 छीनली अलबेली ॥ सखा सब मोहन के मेली । करी जो जो  
 सगरी भेली ॥ दोहरा ॥ भली बुरी सब पड़ैगी, आगे चलत  
 जनाय । हँसी बुरी हर बारकी माई, मुझको नहीं सुहाय ॥ हँसी  
 क्या है हँसाउ जाना । मांगते यौवनका दाना ॥ ५ ॥ रीति यह  
 नई नई कैसी । न देखी सुनी कभी जैसी ॥ ललनपियकी बंदिश  
 ऐसी । रंगीलीसी रंगत तैसी ॥ दोहरा ॥ वतन फरुखाबाद है, कूँचा  
 मित्तर सैन । नन्हेमल उस्ताद हमारे, कृष्ण सहाई ऐन ॥ मदत  
 पर रहते हनुमाना । मांगते यौवन का दाना ॥ ६ ॥

### स्तुति श्रीवेंकटेश्वर ॥

ध्वनि जोड़े की लावनी रंगत सुहावनी ॥ ( १२ )

वेङ्कटेश्वर कोसगाना है । उनपै मन मेरा लुभाना है ॥ ( टंक )  
 अलख अजपूर्ण ब्रह्मस्वामी । अखिल पुरजन अन्तर्यामी ॥ उग्र-  
 वपुसगुण रूप नामी । वरद वाञ्छितार्थवसुयामी ॥ शेर ॥ उन्हीं  
 श्रीरंग रंगीके रंगीले रंग मनभाते । रसीले प्रेम में उनके अमीले



रस रुचिर छाते ॥ ढंगीले जन वो हो जाते शरण उनकी में जो  
 आते । तमीले भाव तन मनके कपट छल छन्द टलजाते ॥ दो-  
 हरा ॥ प्रेम परायण पूर्ण सो, होत वैष्णव देह । भुक्ति मुक्ति अधि-  
 कार सार को, लहत सदा बिन गेह ॥ नेह जिनके मन बिकाना  
 है । उनपै मन मेरा लुभाना है ॥ १ ॥ वो सूरत श्यामल सोह-  
 नियां । माधुरी मूरति मोहनियां ॥ योगा सब योगसे जोहनियां ।  
 प्रदा प्रमोद अम्बोहनियां ॥ शेर ॥ करोड़ों नाम जिनके वेद यश  
 पौराण गाते हैं । उपनिषद् भाष्य गीतादिक न जिनकी गतिको  
 पाते हैं ॥ मुनी महात्मा उनसे लगन अपनी लगाते हैं । पुरन्दर  
 पार्वती पति प्रीति युत जो जग रचाते हैं ॥ दोहरा ॥ तिन्ह पद  
 पद्म पराग रस, बस मन मधुकर मोर । लपटानो दिन रैन चैन  
 सों, तनहूँ की सुधि छोर ॥ जिनपै दिल अलमस्ताना है । उनपै  
 मन मेरा लुभाना है ॥ २ ॥ रूप उनके का जीवैरागी । रहे नित  
 उनका अनुरागी ॥ जीव वोही जगमें बड़भागी । जिनकी है  
 हरिसे डोरलागी ॥ शेर ॥ वो नर तन धन्य धनि जननी जनक  
 जिन्ह ऐस सुत जाया । सफल जग जन्म उन जिन बैकटेश्वर  
 केर गुण गाया ॥ प्रतापी कुल वो सुरतरु जिसमें अमिफल ऐस  
 उपजाया । जो दुर्लभ जग पदारथ है कृपा भगवत से भर पाया ॥  
 दोहरा ॥ कोटिन जन्म बिहायकर, पुनि बहु देवन ध्याय ।  
 मिलत तबहिं सहनेम प्रेम श्री, रंग भक्ति सुखदाय ॥ विदित जो  
 सकल जहाना है । उनपै मन मेरा लुभाना है ॥ ३ ॥ भक्त व-  
 त्सल वो भगवन्ता । दया सागर कमला कन्ता ॥ सरल सुन्दर  
 स्वभाव सन्ता । पलक दरियाई अत्यन्ता ॥ शेर ॥ अजब क्या  
 है बनालें मुझको भी जन चरण अपने का । लिया जो मन मेरेने



प्रेम उनके नाम जपने का ॥ है निश्चै अब न अंकुर पाप का  
मोमनमें थपने का । कृपा हो नँदललन की तौ न हरि सुमिरनसे  
टपनेका ॥ दोहरा ॥ मन वच क्रमसों रुचि यही, जामी मम जिय  
माहिं । अपनावेंगे ललन समुझ मुहिं, जन को भाव निबाहिं ॥  
जिगर जी में जो समाना है । उनपै मन मेरा लुभाना है ॥ ४ ॥

### सखी शोभा ॥

ध्वनि जोड़े की लावनी रंगत लुभावनी ॥ ( १३ )

उम्र बाली बालीवाली । मदनमें मस्त हुस्नवाली ॥ टेक ॥  
भाल बेंदी बेंदा आला । कान में कर्णफूल बाला ॥ सुराहीदार  
गला ढाला । पड़ी गल हीरन की माला ॥ दोहरा ॥ नैन नुकीले  
नरगिसी, ऐन रसीली सैन । रुखसारों की झलक खुशनुमा,  
बोलै मधुरे बैन ॥ नागिनीसी लट लटकाली । मदनमें मस्त  
हुस्नवाली ॥ १ ॥ गुल बदन पर यौवन भरपूर । मिसाले माह-  
ताब के नूर ॥ अजब अन्दाज नाज मशहूर । देख होवें शरमिन्दा  
हूर ॥ दोहरा ॥ महिज मुलायम मरूमली, साफ शिकम खुशरंग ।  
बदनमें नाजुक पन कमाल, आमद अनंग की अंग ॥ चाल  
अलबेली मतवाली । मदनमें मस्त हुस्नवाली ॥ २ ॥ परीसे  
परियां पेशानी । डुपट्टा सजे आसमानी ॥ लटक लटकन की  
नूरानी । अदा कुल जहाँ के मनमानी ॥ दोहरा ॥ हरी हरी चु-  
ड़ियां पड़ीं, गोरे गोरे दस्त । नइ नाजिन यौवन मदमाती, उ-  
मँग भरी अलमस्त ॥ हँसन नहिं जादू से खाली । मदनमें मस्त  
हुस्नवाली ॥ ३ ॥ लबों मिस्री काली काली । पानकी दे बहार  
लाली ॥ हिना हाथों में निरयाली । खिली छवि फवि की उजि-



याली ॥ दोहरा ॥ सांचे का ढाला मनो, जिस्म किस्म नायाब ।  
दामिनि की क्या कहूँ हकीकत, शरमाता महताब ॥ ललन पिय  
की बन्दिश आली । मदन में मस्त हुस्नवाली ॥ ४ ॥

ध्वनि जोड़े की लावनी रंगत मोहिनी ॥ ( १४ )

घरमें दोदाने के लाले । बनें शाही मिजाज वाले ॥ टेक ॥  
खुदाकी शान अजायब है । आकिलों की अक्ल गायब है ॥ हमी  
जिनके दिल की नायब है । दिल से हमदरदी गायब है ॥ शेर ॥  
नहीं कायममिजाजी का कभी जलवा देखा । इश्क खुद गरजी  
का दिलमें बेइन्तिहा देखा ॥ दिल तो हर रंगकी रंगत में चुलबुला  
देखा । शौक वह कौनसा जिस्से न सिलसिला देखा ॥ टूट ॥  
सदह मजलिसें देखीं भालीं । रंगतें लाखों रंग डालीं ॥ कौन  
कूँचा न देखे भाले । बनें शाही मिजाज वाले ॥ १ ॥ न शककत  
का लिबास तन पर । हवा से ल्याकत से अप्तर ॥ न दिल उ-  
ल्फत का अस्र तिलभर । आदमियत के न जांच की दर ॥ शेर ॥  
दम् में अपनाते हैं दम् में जुदा करते नहीं देर । दम् में कुछ कहते  
हैं कुछ करते हैं ऐसा करें अन्धेर ॥ जवाँ से कह बदल जाना तो  
कुछ भी बात नहीं । दिखादें भूँठ को कर सच करादें भूँठ से सच  
जेर ॥ टूट ॥ फितूना पनमें है फतेयाबी । कहो जिसकी करदें  
खराबी ॥ बहुतों को दें टाले बाले । बनें शाही मिजाज वाले ॥  
२ ॥ रुखाई के रंग में रंगीन । पढ़े नहिं रसाई की आईन ॥ हिमा-  
कत घुसी दिल में संगीन । बजाते सदा हसद की बीन ॥ शेर ॥  
कुछ भी पर दर्द का दिलमें न दर्द आये कभी । नहीं बेददी से  
पीछे कदम टल जाये कभी ॥ शायद किसी पै नजरे मेहर शकसे  
होगई । मुमकिन है न दिल रंज उनका लाये कभी ॥ टूट ॥



सुलेमां तुरुक मिजाजी के । दोस्त वो अपनी राजी के ॥ बनावट  
 उपरी मनके काले । बनै शाही मिजाज वाले ॥ ३ ॥ बनै आ-  
 लिम हैं पढ़े थोड़ा । सिखे परपंच छल करोड़ा ॥ सजे गल में  
 गुरुर तोड़ा । उनसो नफरत का जड़ा जोड़ा ॥ शेर ॥ रखते  
 चलाकी चतुरई हर फन के गुनमें हैं । चालाक हर तरह से वो  
 अपने सखुन में हैं ॥ तड़ जाये दाँव घातको उनकी अगर कोई ।  
 उलटा ललन बनायें उसे यह वो उन में हैं ॥ टूट ॥ मसखरों में  
 मसखरे भारी । करें सारी ताबेदारी ॥ अपने मतलब के पर काले ।  
 बनै शाही मिजाज वाले ॥ ४ ॥

## द्वितीय दानलीला ॥

लावनी रंगत बेनजीर ॥ ( १५ )

सुत श्याम यशोदा जीको । मोसे मांगत दान दही को ॥  
 ( टेक ) गइ दधि बेचन वंशी बट । मुहिं मिलो कान्ह यमुना तट ॥  
 मेरो भटक चीर नागर नट । दइ पटक मही मटकी पट ॥ छन्द ॥  
 ऐसो निपट निठुर कान्हाई अधिक जोर सैयां । मटकी फोरी कोरी  
 कोरी भकभोरी बैयां ॥ गोरस लीन्हों लूट गिरो हरवा भंभट  
 मैयां । चटक मटक नट खट नागरनट अटको हम पैयां ॥ टूट ॥  
 परूं ज्यों ज्यों हरि की पैयां । अधिक त्यों त्यों कर अठलैयां ॥  
 कियो तार तार चुनरी को । मोसे मांगत दान दही को ॥ १ ॥  
 सखि ऐसो दीठ कान्हाई । दियो धरणि दही ढरकाई ॥ छिपछिप  
 कुंजन में जाई । मोसे करत रारि नित आई ॥ छन्द ॥ हरी हरी  
 रंग भरी खरी से खरी रंगोली की । दुख दाई तोरी डोरी अँगिया  
 अनमोली की ॥ ऐसोरी घाती छाती मसकाई चोली की । जरै यह



ऐसी बेशरमी की बान ठठोली की ॥ टूट ॥ अकेली जचिं मुहिं  
नादाना । लिपट गयो मारग दरम्याना । क्या क्या कहूँ बात  
नई को । मोसे मांगत दान दही को ॥ २ ॥ चित चंचल चपल  
मुरारी । मुहिं करत दुखी हरबारी ॥ कर कंकन चुड़ियां सारी ।  
गई करक दरक सब न्यारी ॥ छन्द ॥ बरजोरी त्यों त्यों री जोरा  
जोरी कान्ह नदान । करे ठठोली जान २ कर मुझे बहुत हैरान ॥  
नन्द को छैला दीठ कन्हारि रोकै मारग आन । तजे म्याद मर्याद-  
न नीकी मनमोहन की बान ॥ टूट ॥ संगमें लिये सखा सारे ।  
फिरत कुंजन मारेमारे ॥ छेड़तहर ब्रजयुवतीको । मोसे मांगत दान  
दही को ॥ ३ ॥ सखि अति निलज्ज गोपाला । भरि लियो अंक  
नँदलाला ॥ मैं घबरानी ब्रजबाला । होगई हाल बेहाला ॥ छन्द ॥  
मित्तू कूंचे में भांकी अंजनीपुत्र महावीर । हर हफूते दरबार बार  
मंगल को होवे भीर ॥ चढ़ै बहुत परसाद गावनाहोवे मन्दिर तीर ।  
नन्हेमल उस्ताद महागन्धर्व गुणी गम्भीर ॥ टूट ॥ भ्रात जिनके  
ज्वाला परसाद । वतन सरनाम फरुखाबाद ॥ कह छन्द ललन  
पिय नीको । मोसे मांगत दान दही को ॥ ४ ॥

लावनी रंगत वशीकरण ॥ ( १६ )

होनीका होना होना होनीकाहै । होनी वश दुख सुख सदा  
वेदटीका है ॥ ( टेक ) होनीने मिटाया राजतिलक रघुवरका ।  
होनीने दिया वन वास छुड़ाया घरका ॥ होनी पठवा मृग कंचन  
युवा उमर का । होनीने छुटाया साथ लषण सियवरका ॥ होनी  
ने लँघाया रेख लषणजी का है । होनी वश दुख सुख सदा वेद  
टीका है ॥ १ ॥ होनी ने रावण काहिं कुमति उपजाई । सोचा  
नहिं धर्माधर्म हरी सियमाई ॥ होनी ने त्यहि उर अस हठ कठिन



सृजाई । माना नहिं क्यहु की कुल की क्षय करवाई ॥ होनी ने  
 दुखाया जिय पिय सियजीका है । होनी वश दुख सुख सदा वेद  
 टीका है ॥ २ ॥ होनी ने यदुकुल को मुनि शाप दिलाया । होनी  
 ने कुरु के कुलको कुल विनशाया ॥ होनी ने सतीका गूढ़ ज्ञान  
 बिसराया । होनी ने दक्षतनया तन भस्म कराया ॥ होनी ने किया  
 शिव ब्याह पार्वती का है । होनी वश दुख सुख सदा वेद टीका  
 है ॥ ३ ॥ होनीने पठाया पताल बलि राजाको । होनीने किया  
 बलि अधीन रमण रमाको ॥ होनीने कौरव पांडवन खिलाय जुवा  
 को । दिया द्वादशवर्ष विलास विपिनवासा को ॥ होनीने किया  
 पति वियोग दुपदी का है । होनी वश दुख सुख सदा वेद टीका  
 है ॥ ४ ॥ होनीने परीक्षित नृप मन भ्रम उपजाया । शृंगी ऋषि  
 के गल मृतक भुजग डलवाया ॥ होनीने ऋषिसुत सों नृप शाप  
 दिलाया । होनीने सर्पसों भूपति को डसवाया ॥ जय विजय  
 शापमुनि दिया फल होनीका है । होनी वश दुख सुख सदा वेद  
 टीका है ॥ ५ ॥ होनीसे हुई पाषाण गौतमी नारी । धर नारायण  
 नर रूप अहिल्या तारी ॥ होनीने जटायू गीध की गती सुधारी ।  
 होनी गति विधिहू किंचित सकत न टारी ॥ होनी वश जन्म  
 नंदललन रुक्मिणी का है । होनी वश दुख सुख सदा वेद टीका  
 है ॥ ६ ॥ होनीने जन्मेजय से वध सर्प कराये । मायाके अश्वपर  
 ह्वै सवार वन धाये ॥ होनीने माया त्रियाके दर्श दिवाये । त्यहि  
 मति लै नृपसों षोडश द्विज बधवाये ॥ फल अमिट ललन पिय  
 होनी करनी का है । होनी वश दुख सुख सदा वेद टीका है ॥ ७ ॥

ख्याल बहिर लँगड़ी ॥ ( १७ )

करके प्यार दिलदार कभी दिल नजरे मेहर लाया तो करो ।



महिब दिलोंपर रहिमकर ज़रा तरस खाया तो करो ॥ ( टेक ) पड़े  
 रकीबों के पाले अबतुम जानलिया जाना हमने । तौर निगहका  
 और का और है पहिचाना हमने ॥ जो कुछ के उल्फत तुम्हें  
 हमारी उसेभी अनुमाना हमने । बस होचुकी अब खत्म हुइराहो  
 रस्म जाना हमने ॥ शेर ॥ तुम्हें गैरोंसे कब फुरसत मिलैगी ।  
 तुम्हारी हमको क्यों सोहबत मिलैगी ॥ तकल्लुफ पासतक आने  
 में होगा । हजारों हाथ क्यों राहतमिलैगी ॥ उड़ान ॥ रोज़रोज़  
 आसको न तौ गाहे गाहे आया तो करो । महिबदिलोंपर रहिम  
 कर ज़रा तरस खाया तो करो ॥ १ ॥ गैरों से उल्फत करके कुछ  
 नफ़ा न सनम उठाओगे । कहा न माना मेरा तो फिर पीछे पछ-  
 ताओगे ॥ अग्यारोंके रंगपै चढ़कर अपना रंग उड़ाओगे । हो  
 कर के बहू मुफ़्त में हरजाई कहलाओगे ॥ शेर ॥ शान ओ शौ-  
 क़त को मिट्टी में मिलाना । ये ज़ेबा तुमको नहीं हरगिज़ है  
 जाना ॥ किसी आकिलने सच मसला कहा है । गया जो वक्त फिर  
 नहीं हाथ आना ॥ उड़ान ॥ कहे जो कोई अपने भलेकी उसको  
 मानजाया तो करो । महिब दिलोंपर रहिमकर ज़रा तरस खाया  
 तो करो ॥ २ ॥ जो कुछ तुम्हारा पास हमें वो गैरों को होना  
 मुश्किल । गरज़ की दुनियां है जाना होना न अनहोना मु-  
 श्किल ॥ किसी दिलजले का जी जलाकर चैनसे फिर सोना  
 मुश्किल । बदनामी का लगा धब्बा गर्चे तो धोना मुश्किल ॥  
 शेर ॥ शराफ़त शय न कुछ दुनिया में होती । तो जैसा संग  
 था वैसाही मोती ॥ चलाकरती छुरी है मैं के सरपर । रही किस  
 की अती जब जिसने जोती ॥ उड़ान ॥ पाके हुस्ने चमने बहार  
 बे लुफ़्त मत लुटाया तो करो । महिब दिलोंपर रहिमकर ज़रा तरस



खाया तो करो ॥ ३ ॥ अपने हो बनना गैर चाहो क्या यह  
 वफा दारी समझे । घर घर के टुकड़े चाखने में क्या मजेदारी  
 समझे ॥ कहीं को साई कहीं बधाई क्या यह तरहदारी समझे ।  
 अपनी समझमें सनम् तुम क्या यह वजहदारी समझे ॥ शेर ॥  
 ललनपन दीजिये थोड़ा मेहरबाँ । हमें कहना सो कहि छोड़ा मेह-  
 रबाँ ॥ वास्ता तुमसे जो जोड़ा मेहरबाँ । न तोड़ेंगे न है तोड़ा  
 मेहरबाँ ॥ उड़ान ॥ लिया इतहां मेरा न कबकब जाँपै सच  
 बताया तो करो । महिब दिलों पर रहिम कर ज़रा तरस खाया तो  
 करो ॥ ४ ॥ वोही हैं हम दूसरे नहीं अब हमसे जो दिल हटाते  
 हो । क्या है माजरा है बायस क्या क्यों नहीं बतलाते हो ॥ ललन  
 तो जब थे तभी अब तो तुम ललन पिया कहलाते हो । श्री नन्दे-  
 मल गुरुके शागिरद जगत् मन भाते हो ॥ शेर ॥ तुम्हारे सबसबों  
 को तुम हो प्यारे । हमारे जी जिगर चश्मों के तारे ॥ तन्त्रजुब  
 है मगर हमको बड़ा यह । तुम्हारे हम हुये तुम नहीं हमारे ॥  
 उड़ान ॥ मुमकिन बेमुमकिन पै दिल आहिद करने को हिरसाया  
 तो करो । महिब दिलों पर रहिम कर ज़रा तरस खाया तो करो ॥ ५ ॥

खयाल सिकशता बहिर ॥ (१८) ॥ ६ ॥ कि कि

चारों सिम्त को देखा भाला ढूँढ़ा घर घर जिला जिला । मिला  
 सो तुमसा मिला मगर कोई हमें न अहिले वफा मिला ॥ टेक ॥  
 खुद गरजी कुल जहां में नहीं सच्ची उलफत दिखलाती है । क्रदे  
 मुहब्बत नहीं न क्रदे इल्म लियाकत जाती है ॥ कर लेना तो  
 सहिल निभाते उलफत फटती छाती है । नर्म गिजा नहीं चने  
 आहिनी चबते न एक बिसाती है ॥ शेर ॥ चाहे कूँचे में जो  
 गया हड़ावो । गोया उल्टे अस्तुरे से मुँड़ावो ॥ है कालिख की



कोठरी इश्क बल्लह । न दागी हो कवन ऐसा बचावो ॥  
 उड़ान ॥ जोरो जुल्म रंजो गम सितम किस किस्से न इश्क  
 का है सिलसिला ॥ मिला सो तुमसा मिला मगर कोई हमें  
 न अहिले वफा मिला ॥ १ ॥ तुम्हें भी देखा बेदर्द किस्से कहें  
 हाले दिल मंशा का । निसार तुम पर किया दिलोंजां न हाथ  
 आया नाम नफाका ॥ सुभा बुभा समझा कर हारे करके साका  
 हाहाका । मगर न यक माने तुम मेरी अब और भी दिलमें हुआ  
 सनाका ॥ शेर ॥ राहे मौला में कुछ देना हो देदो । सबावे सौदा  
 है करलो न खेदो ॥ तुम्हारे इश्क का सौदा समनवर । अगर  
 बिका हमीं लेते हैं लेदो ॥ उड़ान ॥ हूं मैं तेरा इश्के मरीज कर  
 बंगा वस्ले दवा पिला ॥ मिला सो तुमसा मिला मगर कोई हमें  
 न अहिले वफा मिला ॥ २ ॥ सनम दिले दौलत है ये हाजिर  
 जर हाजिर हाजिर तन है । तन मन तेरा कुल धन तेरा जो कुछ  
 मेरा पट भूषन है ॥ हुक्मी बन्दा मुझे बनाओ तौ यह कथन माहे-  
 तन है । न दिल में रखना हिजाब मुझ से कस्म तुम्हें मेरी जानो-  
 मन है ॥ शेर ॥ कुदूरत हम रखें तुमको भी जा है । तकल्लुफ हम  
 करें तुमको बजा है ॥ मिसाले साफ आईना अगर हम । तो तुम  
 को ऐसाही होना खा है ॥ उड़ान ॥ मिलो चहें मत मिलो हम से  
 कुछ न हमरा तुमसे यार गिला । मिला सो तुमसा मिला मगर  
 कोई हमें न अहिले वफा मिला ॥ ३ ॥ तुमने जो आशिक किया  
 और हम भी और सनम बनायेंगे । हम तो जलेंगे मगर सनम  
 हम तुमको बहुत जलायेंगे ॥ जो कुछ बनाये बनैगी हमसे सो  
 करके सबी दिखायेंगे । कहोगे जो कुछ कभी तुम हमसे एक की  
 लाख सुनायेंगे ॥ शेर ॥ हुई कोई हो खता गरचे हमारी । सजा



वो दो जो हो मरजी तुम्हारी ॥ किसी दुश्मन के बहिकाने से  
 गरचे । छुड़ाते हौ जो अपनी हमसे यारी ॥ उड़ान ॥ ख देगा  
 येवज्ज इसका जिसने प्यार हमारा दिया ढिला ॥ मिला सो तुम  
 सा मिला मगर कोई हमें न अहिले वफा मिला ॥ ४ ॥ भला जफा  
 से हुआ किसी का जी चाहे वो कर देखै । दगा किसी का सगा  
 नहीं नहिं माने तो करके नर देखै ॥ करै ललन पन कोई तो फिर  
 वो अपनी जहां में दर देखै । बशर तो देखै हेच नजर से भगवत  
 भी बदनजर देखै ॥ शेर ॥ ललन में नाम भी मेरा ललन है ।  
 कहूं पर वो जो दुनिया का चलन है ॥ नन्हे उस्तादका भी सच  
 सखन है । जुदा हो मिलके तौ हरजाईपन है ॥ उड़ान ॥ हरजाई  
 से मिलके कहो किसने चैन पाया है आक्रिला ॥ मिला सो तुम  
 सा मिला मगर कोई हमें न अहिले वफा मिला ॥ ५ ॥

## खयाल निर्गुण रंगत लँगड़ी ॥

तलाजमा ताश व चौसर ( १६ )

लड़कपने से अरे खिलाड़ी न जाने कितने खेला खेल । सार  
 न जाना कि जिस्से औन गौन की भिटै भ्रमेल ॥ टेक ॥ ताश  
 त्रिगुण का रूप चार बरणों के चारो रंग दिपैं । निरङ्कार वपु ईश  
 इका बाजी के संग दिपैं ॥ दुग्गी दहला गुलाम बीबी बादशाह  
 सँग जंग दिपैं । हमी हुमहुमी जीत लेने की सभी के अंग दिपैं ॥  
 शेर ॥ बिला इकताई इके के कोई जीतै न जीतैगा । फटा सो फूट  
 तज जो मेल रखना चित न चीतैगा ॥ हो इकमिल हरि से पावेगा  
 वही उसको जो प्रीतैगा । लड़ाते बाजियां नहिं तो हमेशः जन्म  
 बीतैगा ॥ उड़ान ॥ आफताब सी कला जिसकी हर बाजी में पड़



रही नकेल ॥ सार न जाना कि जिस्से औन गौन की मिटै  
 भ्रमेल ॥ १ ॥ पति पत्तों की चाहे जीत में कैसा मन लुभि-  
 याता है । मगर जितै वहि जिधर वो अफसर इका आता है ॥  
 इकै सदा जितावै जीतै फूट फितूर हराता है । मेल वो शय  
 है कि यक यक मिल ग्यारह कहलाता है ॥ शेर ॥ दिले दुबधा  
 दुर्गंगी दूर फिर बाजी जिती जानो । हो यह बाजी से वह बाजी  
 पै सिद्धी हर मिती जानो ॥ अधम आलस अविद्या है न इसके  
 रंग में भूलो । पड़े पौ बद्दुआ मतले कुमति की फिर इती  
 जानो ॥ उड़ान ॥ जय रघुवर को मिली करके सुग्रीव और हनु-  
 मत से मेल ॥ सार न जाना कि जिस्से औन गौन की मिटै  
 भ्रमेल ॥ २ ॥ चौसर भी चौरंगी बाजी इस रंग में रंग रहा तौ  
 क्या । खेल न जाना उम्र भर खेला फिर गम रहा तौ क्या ॥  
 लाल हरी काली पीली गोठें पै जो जी जम रहा तौ क्या । जोट  
 जुटाना न जाना फूट हुये थम रहा तौ क्या ॥ शेर ॥ खिलाड़ी  
 दो दुर्गंगी गोठ दो दो जोट लै खेलैं । बँधा जब लौ युग हो जी  
 चाहे गोठें ले तहां ठेलैं ॥ मसल सच है जो युग फूटा गई मारी  
 नरद फिर तो । न आवे दांव जो जुट का तो बाजी हार गम  
 खेलैं ॥ उड़ान ॥ जो है मजा मिहल में फूट डाले दुःखों की गले  
 हमेल ॥ सार न जाना कि जिस्से औन गौन की मिटै भ्रमेल ॥ ३ ॥  
 खेल मेल बिन मदद से कोई काम न दुनियां में होवै । तृण गण  
 दाँवरि महा मतवाले गज का बल धोवै ॥ जमात की है करमात  
 कुल सगरे दुख आफत खोवै । एका गर हो सकल सुख चैन की  
 नित निदिया सोवै ॥ शेर ॥ खेल वो खेल जिसमें हरि चरित का  
 मेल दिखलाये । न पाप आये निकट कोई न बाजी हार की



आये ॥ जो दुस्तर देवतों को पाके वो मानुज की योनी को ।  
सफल करना चहे यशुमतिललन प्यारे के गुनगाये ॥ उड़ान ॥  
जगत में द्याये कीर्ति सदा सुरपुर में वासकर करै वो केल ॥ सार  
न जाना कि जिस्से औन गौन की मिटै भ्रमेल ॥ ४ ॥

होली लावनी रंगत रंगीली ( २० )

अब तो मोहन होली होली ॥ करो अब सखि समाज  
डोली ॥ ( टेक ) निवासो मेरे आज निवास । बिलासो बि-  
विधविहार बिलास ॥ निकासो दुब्धा दुई निकास । प्रकाशो रंग  
रस केर प्रकास ॥ दोहरा ॥ रंग रंगीले लालजी, रसिक शिरोमणि  
बीर । प्रेम परायण रीति प्रीति पति, श्यामल शुभग शरीर ॥ पू-  
जिये ममाश दिल खोली । अब तो मोहन होली होली ॥ १ ॥  
बदलिये बसन रंग भीजे । लाऊं नव वस्त्र सो सज लीजे ॥ विनय  
मेरी पै कान कीजे । इतनि यह मुहि माँगे दीजे ॥ दोहरा ॥ अस  
अवकास न आय है, हमरे तुम्हरे हाथ । पुनि फागुन को मास  
खास, अभिलाषो उमँगन साथ ॥ लगाओ हिय सम्पति चोली ।  
अब तो मोहन होली होली ॥ २ ॥ उड़ै ये छैल उछाह अबीर ।  
चाप चित चोया चाव गँभीर ॥ गेर गम गुलाल गहि कर धीर ।  
अरगजा वत उर तृप्त शरीर ॥ दोहरा ॥ मणि मन्दिर में सजरही,  
सुमनन सुन्दर सेज । करुणाकर दीजिये आज मुहि मन्मथ  
दान दहेज ॥ मलिय हिय रुचिर रुचि की रेली । अब तो मोहन  
होली होली ॥ ३ ॥ न जाने दूँ मैं न जाने दूँ । न कहिं तोरा  
जिय भुरमाने दूँ ॥ मौज तोरी जो हो मनाने दूँ । न सुधि कोइ  
सौत की आने दूँ ॥ दोहरा ॥ रौज मौजसन भोगिये मनमाने  
सुख भोग । नन्द ललन लाड़िले मनोहर, विधि वशभा संयोग ॥



आज यह धनि दिन अनमोली ॥ अब तो मोहन होली होली ॥ ४ ॥

बारहमासी ॥

रंगत विरहिनी ॥ ( २१ )

पिया बिन लगा सताने मैं । बदन विरहा की पीर नहिं  
चैन ॥ ( टेक ) हुआ आगम अषाढ़ का री । बहार वर्षा की हुई  
जारी ॥ मगन मन सबही संसारी । पिया बिन मुझे सोच भारी ॥  
दोहरा ॥ घिरी घटा चहुँ ओरसे, बरसत मन्द फुहार । मैना मोर  
मराल कोकिला, बोलैं आम की डार ॥ पवन चलती शीतल  
मुखदैन । बदन विरहा की पीर नहिं चैन ॥ १ ॥ शुरू जब से  
सावन का मास । तक रही पिया मिलन की आस ॥ चैन दिन  
रैन न उन बिन त्रास । रंजोगम से होरही उदास ॥ दोहरा ॥  
कर सिंगार घर घर सखी, साज कुसुम्भी चीर । भूलैं पीतम संग  
हिंडोले, गावें गीत गँभीर ॥ लड़ावें लोचन दैदैं सैन । बदन वि-  
रहा की पीर नहिं चैन ॥ २ ॥ महीना भादों का आया । मुझे  
गम कमाल दिखलाया ॥ उम्रबाली यह दुःख पाया । जात यौवन  
पिय बिन जाया ॥ दोहरा ॥ बारी बयस विवाह कर, आप रमे  
परदेश । प्रीति करी सौतन सँग जाकर, यही मुझे अन्देश ॥ खता  
क्या करी मेहर मुझपैन ॥ बदन विरहा की पीर नहिं चैन ॥ ३ ॥  
काँर आया बगैर दिलदार । जवानी जाती बिन भरतार ॥ बीते  
बरसाके महीने चार । न सोई सनम साथ एक बार ॥ दोहरा ॥  
बे कुसूर हम से पिया, दर्ई मुहब्बत तोड़ । हुई खता क्या सखी  
हमारी, गये सजन मुख मोड़ ॥ लगा ये जा सौतनसे नैन । बदन  
विरहा की पीर नहिं चैन ॥ ४ ॥ किया बेकरार कात्तिक लाग ।



बदन में उठी बिरह की आग ॥ पिया परदेश मन्द हैं भाग ।  
 गजब गमदिया सनम ने दाग ॥ दोहरा ॥ घर घर यौवन वा-  
 लियां, अदादार कुलनारि । पूजें जुर जुर सखी दिवाली, मदन  
 भरीं सुकुमारि ॥ करै रौशन चिराग बहुलैन । बदन बिरहा की  
 पीर नहिं चैन ॥ ५ ॥ किया अगहन ने अधिक अधीर । पिया  
 नहिं दिया दरश बेपीर ॥ जिया तरसत उन बिन दिल गीर ।  
 नैन बिच भर भर आवत नीर ॥ दोहरा ॥ निशि जागत तड़पत  
 सखी, नींद न आवत नेक । हरदम आती याद पिया की, होवत  
 खेद अनेक ॥ न कटती है बैरिन दिन रैन । बदन बिरहा की  
 पीर नहिं चैन ॥ ६ ॥ पूस बिन पिया सखी आवे । पड़ै सरदी  
 जरदी छावे ॥ कोई जा पिया को समझावे । लाके हमदम को  
 दिखलावे ॥ दोहरा ॥ ज्वानी भर आई बदन, उमंगो यौवन  
 आय । पिया बिना को तपन मिटावे, यह दुख सहोई न जाय ॥  
 सखीरी है किस्मत दुख दैन । बदन बिरहा की पीर नहिं चैन ॥ ७ ॥  
 माघ आगई बसन्त बहार । सखी हिलमिल पूजें त्यौहार ॥  
 मुझे हमदम की है दरकार । न उन बिन भावत भवन न द्वार ॥  
 दोहरा ॥ कह दीजो कोई सखी, मालिन से समझाय । मेरे घर  
 बसन्त मत लावे, पड़ूं तुम्हारे पाय ॥ मेरा जी जलै सोचमें ऐन ।  
 बदन बिरहा की पीर नहिं चैन ॥ ८ ॥ लगा फागुन होली का  
 ढंग । फिकै भोलिन गुलाल अरु रंग ॥ मलैं सखि चोया चन्दन  
 अंग । फाग खेलैं पीतम के संग ॥ दोहरा ॥ स्वर सिंगार मुहचंग  
 ढफ, बाजैं बेणु मृदंग । नृत्य करै गागा सखि होली, साथैं सुर-  
 सारंग ॥ मनोहरता सुन्दर अति बैन । बदन बिरहा की पीर नहिं  
 चैन ॥ ९ ॥ चैत चित चिन्ता की भरपूर । चतुर कोइ करे रंजको



दूर ॥ बदन पर छाया रहा है नूर । मगर पिय अजहुँ न आये  
 क्रूर ॥ दोहरा ॥ जिय चाहत डड़ जा मिलूं, पिय प्यारे के देश ॥  
 पर बे वश क्या करूं दर्ई पर, दिये न चलती पेश ॥ करूं सौ सौ  
 तदबीर चलै न । बदन बिरहा की पीर नहिं चैन ॥ १० ॥  
 लगा बैशाख अति मुहावन । मिलगये सजनी मनभावन ॥  
 साज सिंगार काढ यौवन । पिया सँग किया भोग मुदमन ॥  
 दोहरा ॥ मन अनन्द, मुख चन्द है, अपने तन लिपटाय । सोई  
 पिय के संग सखीरी, सगरी रैन गँवाय ॥ सखीको छोड़त पिया  
 बनै न । बदन बिरहाकी पीर नहिं चैन ॥ ११ ॥ जेठ ने किय  
 जिय परम निहाल । पुराई मन मुराद नँदलाल ॥ नन्हे गुरु  
 मुझपर रहें दयाल । जनक ज्वालाप्रसाद प्रतिपाल ॥ दोहरा ॥  
 वतन फरुखाबाद है मित्र कूँचा स्थान । दूर दूर सरनाम मूरती  
 अलबेली हनुमान ॥ ललनपियकी बन्दिश सुखदैन ॥ बदन  
 बिरहा की पीर नहिं चैन ॥ १२ ॥

## आरती श्रीशिवजी की ॥

जय शिव जय शिव परंपरा शिव ओंकारेश्वर गौरीशम् ॥  
 नमामि शंकर भजामि शंकर वदामि शंकर तव शरणम् ॥  
 ( अन्तरा ) ललाटलोलित रजनीनायक पन्नगभूषण मनोहरम् ।  
 हस्तत्रिशूल तापत्रयताडक बाजत डमरू ध्वनि मधुरम् ॥ जूट  
 जटा बिच गंगतरंगा छवि अर्धगा शुभ्र परम् । नमामि शंकर  
 भजामि शंकर वदामि शंकर तव शरणम् ॥ १ ॥ भाल त्रिपुण्ड्रा  
 गलकलमुंडा मंजुल मुद्रा श्रुतिरमणम् । यज्ञोपवित भुजंग विभू-  
 षित बाधंवर मृगच्छालतनम् ॥ पापविमोचन जै त्रयलोचन सुधर



शरासन भासदनम् । नमामि शंकर भजामि शंकर वदामि शंकर  
 तव शरणम् ॥ २ ॥ भस्म चितालंकृता ललिततन दीप्तवान भा  
 भानु समम् । दिग दिग दिग श्रुति योगिनि शाकिनि डाकिनि  
 यक्ष शरण सर्वम् ॥ ऋद्धिरु सिद्ध सनातन सेवक सेवत शेष सु-  
 रेश निगम् । नमामि शंकर भजामि शंकर वदामि शंकर तव  
 शरणम् ॥ ३ ॥ जय अविनाशी काशीवासी सुखराशी कैलासी-  
 सम् । नन्दी भृंगी भूत भैरवादिक वरूथ शोभित संगम् ॥ जयति  
 षडानन गणाधिपतिपितु जय जय प्रसन्न वदनम् । नमामि  
 शंकर भजामि शंकर वदामि शंकर तव शरणम् ॥ ४ ॥ प्रमुद  
 प्रपुञ्ज पाणितल पूरित पूजित विबुध मुनीशमिदम् । सर्वस सुख  
 धन ललन विमोक्षद निज पदरति मुहिं वरहु वरम् ॥ गावैं जे  
 शिव आरति सहहित तिन्ह प्रदहैं अघ दुःख ज्वरम् । नमामि  
 शंकर भजामि शंकर वदामि शंकर तव शरणम् ॥ ५ ॥ इति  
 श्रीमहादेव आरती समाप्ता ॥

### दोहा ॥

नन्दललन के चरित को, पढ़ै सुनै जो कोय ॥  
 प्रेम परायण धारमिक, अचल भक्ति त्यहि होय ॥ १ ॥  
 छन्द बन्ध शब्दार्थ में, कछु मम चूक जनाय ॥  
 ताहि सम्यजन शोधिहैं, मोहि ललन उपमाय ॥ २ ॥  
 इति श्रीकविवर पण्डितललनपियाशर्माविरचिता ।

ललनप्रमोहिनी सम्पूर्णतामियाय ॥



## पं० ललनपियाकृत पुस्तकें ॥

|                          |     |                           |     |
|--------------------------|-----|---------------------------|-----|
| ललनचन्द्रिका सटीक        | १)  | ललनप्रभाकर अर्थात् ललन-   |     |
| ललनफाग                   | १)  | सागर का द्वितीयभाग        | २)  |
| ललनविलास अर्थात् ललन-    |     | ललनप्रदीपिका अर्थात् ललन- |     |
| सागर का छठवां भाग        | २)॥ | सागर का पांचवां भाग       | ३)  |
| ललनक्रान्ता अर्थात् हरि- |     | अष्टयाम                   | १)  |
| श्चन्द्रनाटक ललनसागर     |     | रामायण भजनावली            | १)  |
| का सातवां भाग            | ३)  | काशीभजनावली               | १)  |
| ललनलतिका                 | २)॥ | सीतारामसंयोगपदावली        | २)  |
| ललनसुधाकर अर्थात् ललन-   |     | भजनसंग्रह                 | २)॥ |
| सागर का नवां भाग         | १)॥ | सियवरकेलिपदावली           | २)॥ |
| ललनविनोद                 | १)  | श्रीविष्णुगीतावली         | २)॥ |
| ललनसागर                  | ॥१) | अर्जपत्रिका               | २)  |
| अनिरुद्धपरिणय            | २)॥ | गोपीचंदभरथरी              | १)  |
| ललनकजरी                  | १)॥ | भरथरीचरित्र               | १)॥ |

नीचे लिखी पुस्तकें पण्डित ललनपियाकृत छपकर  
तय्यार हैं मँगाइये विलम्ब न कीजिये ।

१ ललनप्रमोहिनी, २ ललनप्रमोदिनी अर्थात् शत्रुमर्दन दुर्गाचालीसी,  
३ ललनकवित्तावली, ४ ललनरसिया, ५ ललनप्रकाश अर्थात् कसीदा  
वर्ताव दुनियावी, ६ ललनरत्नाकर, ७ ललनरसमंजरी, ८ ललनप्रबो-  
धिनी, ९ ललनशिरोमणि अर्थात् धर्मपताका, १० धर्मध्वजा अर्थात्  
ललनमंत्रिका, ११ बारहमासा सनातनधर्म, १२ हनुमान्साठिका,  
१३ हनुमान्शतक, १४ बद्रीनाथयात्रा, १५ ललनोद्वाहपद्यावली,  
१६ ललनवाद्याभरण, १७ प्रह्लादनाटक, १८ औषधिरत्नमाला अर्थात्  
ललनकलानिधि ।

मिलने का पता:—

**रायबहादुर मुंशी प्रयागनारायण भार्गव,**

मालिक नवलकिशोर प्रेस-लखनऊ.